② प्रो० कारउथर के अनुसार, "विनियोग आय का वह भाग है जो पूँजीगत वस्तुओं पर व्यय किया जाता है।" (Investment is that part of income which is spent on Capital Goods) अर्थात् समाज में जितनी सम्पत्ति होती है उसका एक भाग उपभोग कर लिया जाता है और जो भाग शेष रहता है वह भाग वर्तमान पूँजी कोष या भंडार में वृद्धि करता है तो यह वृद्धि ही एक प्रकार से विनियोग है। दूसरे शब्दों में, उत्पादित आय का वह भाग जो उपभोग पर व्यय नहीं करके पूँजी स्टॉक में वृद्धि के लिये काम में लिया जाता है उसे निवेश कहा जाता है। [illegible] दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था (Two sector Economy) में — $Y = C + I$ होता है

अतः $I = Y - C$, इसमें 'Y' संतुलन आय का प्रतीक है जबकि 'C' कुल उपभोग तथा 'I' कुल निवेश को व्यक्त करते हैं।

प्रो० कीन्स के अनुसार, निवेश की मात्रा को प्रभावित करनेवाले दो महत्वपूर्ण घटक/शक्तियाँ — (i) पूँजी की सीमांत क्षमता (Marginal Efficiency of Capital - MEC) तथा (ii) ब्याज की दर (Rate of Interest) हैं। कीन्स इनमें पूँजी की सीमांत क्षमता (MEC) को निवेश की मात्रा को प्रभावित करनेवाला ज्यादा महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। वह ब्याज की दर को प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों की भाँति ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं मानता। मंदीकाल में निवेश इतना ब्याज सापेक्ष (Interest elastic) नहीं होता जितना प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री मानते थे। प्रो० कीन्स ने इसीलिए पूँजी की सीमांत क्षमता (MEC) को निवेश का मुख्य एवं ज्यादा महत्वपूर्ण निर्धारक घटक माना है। पूँजी की सीमांत क्षमता (MEC) बहुत कुछ व्यावसायिक प्रत्याशाओं पर निर्भर करती है। अल्पकालीन प्रत्याशाएँ वस्तुओं के मूल्य, आय की मात्रा, माँग, वेतन स्तर, एवं ब्याज दर आदि आन्तरिक तत्वों पर निर्भर है, जबकि दीर्घकालीन व्यावसायिक प्रत्याशाओं पर जनसंख्या वृद्धि, राजनीतिक परिस्थितियाँ, युद्ध, विकास की सम्भावनाओं के प्रभाव एवं वृद्धि आदि का प्रभाव पड़ता है।

Scanned with CamScanner

→ सैद्धांतिक रूप में बचत राष्ट्रीय आय का वह भाग है जो उपभोग पर व्यय नहीं किया जाता अत: आय में होनेवाला परिवर्तन साथ-साथ बचत में भी कमी-वृद्धि का कारण बनता है। जब उपभोग की प्रवृत्ति अधिक होती है तो बचत की प्रवृत्ति कम हो जाती है और चूँकि बचत की मात्रा बचत की प्रवृत्ति पर निर्भर करती है तो बचत की प्रवृत्ति की जानकारी प्राप्त के लिये हम निम्न समीकरण का प्रयोग कर सकते हैं—

$$\frac{S}{Y} = 1 - \frac{C}{Y}$$

— बचत तथा उपभोग की मात्रा राष्ट्रीय आय पर निर्भर करती है पर व्यवहार में कभी-कभी यह भी देखने में आता है कि कम आय वाले देशों में भी बचत प्रवृत्ति अधिक अथवा अधिक आय वाले देशों में बचत की प्रवृत्ति कम हो सकती है। बचत कई तत्वों से प्रभावित होती है किन्तु मुख्य तत्व उपभोग क्षमता तथा आय है।

निवेश या विनियोग
(Investment)

साधारण बोलचाल की भाषा में निवेश या विनियोग का अर्थ स्टॉक, शेयर्स एवं सरकारी बॉण्ड आदि के क्रय से लिया जाता है। परन्तु कीन्स चालू स्टॉक, शेयर्स अथवा बॉण्ड के क्रय को निवेश नहीं मानते (वह तो केवल वित्तीय विनियोग (financial investment) है जिसमें प्रचलित वर्तमान निवेश का केवल हस्तान्तरण मात्र है। और ① कीन्स के अनुसार वास्तविक निवेश से अभिप्राय नव-स्थापित कम्पनियों के स्टॉक, शेयर्स, प्रतिभूतियों, बॉण्ड्स आदि के खरीदने से होता है। इसके अनुसार, "वास्तविक पूँजी कोष में वृद्धि को विनियोग कहते हैं।" अर्थात वास्तविक निवेश वर्तमान पूँजी परिसम्पत्ति (Capital Assets) या माल के वर्तमान स्टॉक में वृद्धि करना है, नवीन पूँजी-परिसम्पत्तियों की रचना में जोड़ देना है जिससे रोजगार में वृद्धि हो सके। →

Scanned with CamScanner

→ बचत (S) = कुल आय (Y) – कुल उपभोग (C)

अथवा S = (Y) – (C)

प्रो० क्राउथर ने बचत को निम्न रूप में परिभाषित किया है — "किसी व्यक्ति की बचत उसकी आय का वह भाग है जो उपभोग पदार्थों पर व्यय नहीं किया जाता।" उदाहरणार्थ, किसी देश की कुल राष्ट्रीय आय 800 अरब रुपये है और कुल उपभोग व्यय 600 अरब रुपये है तो कुल बचतें इस प्रकार होगी —

कुल बचत (S) = कुल आय (Y) – कुल उपभोग व्यय (C)

S = 800 – 600 अरब रु.

S = 200 अरब रु बचत हुआ।

बचत (Saving) — बचत की आर्थिक परिभाषाएं व्यक्तिगत बचत तथा सामाजिक बचत दोनों पर समान रूप से लागू होते हैं।

(i) व्यक्तिगत बचत (ii) सामाजिक बचत

"Individual saving and Social saving" प्रो० कीन्स के अनुसार, "बचत जो कि एक व्यक्तिगत गुण है वह सार्वजनिक बुराई बन जाती है।" (saving which is an Individual virtue becomes a public vice)। अर्थात् व्यक्तिगत दृष्टि से बचत करना एक अच्छा गुण है पर, अगर समाज के सभी व्यक्ति एक साथ बचत करने लगें तो उपभोग कम हो जायेगा अतः रोजगार एवं विनियोग (Investment) घटेंगे और राष्ट्रीय आय घटेगी को (समाज में अन्ततः कुल बचत घटेगी जिसका समाज पर व्यापक दुष्प्रभाव पड़ेगा। अतः कीन्स ने व्यक्तिगत बचतों में वृद्धि की अपेक्षा व्यक्तियों को अधिकाधिक व्यय की सलाह दी जिससे आय, रोजगार और सर्वांगीण समृद्धि को सुरक्षित रखने में सहायता मिले।

बचत आय का फलन है (saving is the Function of Income) अर्थात्

$S = F(Y)$

P.T.O →

Scanned with CamScanner

Lect- 27

Macro Economics

Date:- 04.05.20

"बचत एवं निवेश में समानता तथा संतुलन" ①

(Saving and Investment - Exante and Ex-post Equality and Equilibrium)

BA (Hons)
Dr. Dineshwar Paswan
Assist. professor
Deptt. of Economics
MLS college, Sarisab-pahi, (Madhubani)
Mob:- 9973592631

अर्थ: -(Meaning):- आय का जो भाग उपभोग पर व्यय नहीं किया जाता, बचत (Saving) कहलाता है। अत: जब तक बचत का निवेश नहीं किया जाता राष्ट्रीय आय में संतुलन संभव नहीं हो पाता। K. कीन्स के अनुसार राष्ट्रीय आय में संतुलन की अवस्था में बचत एवं निवेश के बराबर (S = I) होना आवश्यक है। कीन्स ने बचत एवं निवेश में परस्पर घनिष्ट संबंध बताया है। अतः बचत एवं निवेश की धारणाओं का विवेचना जरूरी है।

कीन्स के रोजगार सिद्धांत में प्रभावपूर्ण मांग के दो प्रमुख अंग — (i) उपभोग (Consumption) तथा निवेश (Investment) है। कीन्स के अनुसार, उपभोग की प्रवृति अल्पकाल में प्रायः स्थिर रहती है। अतः उपभोग में उस गति से वृद्धि नहीं हो पाती जिस गति से आय में वृद्धि होती है। अत: अर्थव्यवस्था में संतुलन तभी स्थापित होता है जब कुल आय और कुल व्यय बराबर होते हैं।

Saving (बचत)

परिभाषा (Definition):- प्रो० कीन्स के अनुसार "उपभोग व्यय पर आय का आधिक्य ही बचत कहलाता है।" (Saving Means the excess of income over expenditure on consumption) दूसरे शब्दों में, कुल आय में से कुल उपभोग घटाने पर जो शेष रहता है वह बचत (Saving) है अर्थात कुल आय तथा कुल उपभोग व्यय में अन्तर को बचत कहते हैं। इसे समीकरण के रूप में इस प्रकार रखा जा सकता है :→

P.T.O

Scanned with CamScanner